राष्ट्रीय जनजाति संगीत-नृत्य • आंध्रा टीम ने कुचिपुड़ी, तमिल बच्चों ने प्रस्तुत किया आर्मी सॉन्ग

एक मंच पर थिरक रहीं देश भर की जनजाति लोक कलाएं, प्रतिभाओं के साथ संस्कृतियों का मिलन भी

सिटी रिपोर्टर | उदयपुर

राष्ट्रीय जनजाति संगीत एवं नृत्य प्रतियोगिता के तहत शुक्रवार को भी प्रस्तुतियों की धूम रही। दूसरे दिन तमिलनाडु और आंध्रप्रदेश से आए प्रतिभागियों ने डांस और म्यूजिक से अपने अंचल की संस्कृति को दर्शाया, जबकि सिक्किम से आए दल ने नेपाली पेशकश से रंग जमाया।

केंद्रीय जनजाति कार्य मंत्रालय की ओर से सुविवि के विवेकानंद सभागार में एकलव्य मॉडल रेजिडेंशियल स्कूलों की दूसरी राष्ट्रीय सांस्कृतिक प्रतियोगिता के दूसरे दिन विभिन्न राज्यों के बच्चों ने समूह गायन और एकल नृत्य की प्रस्तुतियां दी। जनजाति विभाग की संयुक्त सचिव एम.आर. लेशिंग भी मौजूद रहीं।

तमिलनाडु, केरल के बॉर्डर पर इरुला जनजाति समुदाय प्राचीन समय से ही योद्धा की तरह बचा रहा है लोगों की जिंदगियां

आंध्रप्रदेश की 15 साल की प्रीति कुट्टी ने पारंपरिक नृत्य कुचिपुड़ी पेश किया। बातचीत में बताया कि आंध्रा में मुख्य रूप से गेल्कुला, यानाडी, लाम्बाडी और येन्डू जनजातियां पाई जाती हैं, जिनका प्रतीक यही नाटिका है। तमिलनाडु से 22 बच्चों की टीम ने आर्मी थीम पर ग्रुप सॉन्ग पेश किया। टीम लीडर सिल्वा का कहना है कि तमिलनाडु और केरल के बॉर्डर पर इरुला जनजाति समुदाय रहता है, जो प्राचीन समय से योद्धा की तरह लोगों की जिंदगियां बचाता आ रहा है। यह जनजाति पारंपरिक हर्बल दवाइयों और उपचार विधियों में सिद्ध है। एक महीने मेहनत कर टीम ने प्रस्तुति की तैयारी की है। सिक्किम से आई टीम ने लिम्बिका और भूटिया जनजाति का नेपाली नृत्य तैयार किया।

आज आखिरी दिन भी होंगी प्रस्तुतियां

जनजाति विभाग के इस कार्यक्रम में देश भर के 18 राज्यों की जनजाति कला प्रतिभाएं भाग ले रही हैं। हर साल होने वाले इस कार्यक्रम में जहां कलाकारों के साथ आम जनों में भी संस्कृतियों व विचारों का आदान प्रदान हो रहा है वहीं लोग विभिन्न राज्यों अलग-अलग परंपराओं को भी जान रहे हैं। शनिवार को आखिरी दिन भी प्रस्तुतियों के साथ समापन समारोह होगा।

आंध्रप्रदेश

ANCHOR जनजाति राष्ट्रीय संगीत व नृत्य प्रतियोगिता, 18 राज्यों से 600 विद्यार्थियों ने लिया हिस्सा

लुभाया हर राज्य की लोक संस्कृति ने

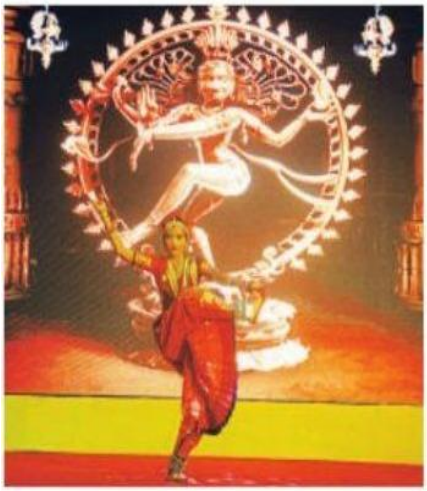

पत्रिकाPLUS रिपोर्टर

उदयपुर • मोहनलाल सुखाड़िया विवि के विवेकानन्द सभागार में शुक्रवार को 18 राज्यों से आए विद्यार्थियों ने एक से बढ़कर एक मनमोहक एकल नृत्य की प्रस्तुतियों से दर्शकों को बांधे रखा। जनजाति कार्य मंत्रालय केन्द्र सरकार की ओर से दूसरे जनजाति राष्ट्रीय संगीत व नृत्य प्रतियोगिता के दूसरे दिन राजस्थान के मेले तो गुजरात का गरबा, महाराष्ट्र की नखराळी लावणी ने जमकर तालियां बटोरीं, दूसरी ओर परम्परागत नृत्यों में ओड़िसी, मोहिनीअट्टम, कथक, भरतनाट्यम जैसी नृत्य प्रस्तुतियों को दर्शक एकटक देखते रह गए। हिमाचल व दक्षिण भारतीय नृत्यों की शृंखला भी खूब सजी। सुबह के सत्र में सभी विद्यार्थियों का एकल नृत्य हुआ। तो शाम को समूह गान में देशभक्ति के तराने भी गूंजे। कार्यक्रम में बतौर अतिथि जनजाति कार्य मंत्रालय केन्द्र सरकार के संयुक्त सचिव एमआर शेरिंग ने शिरकत की। सुबह करीब दस से दोपहर 1.30 बजे तक चले आयोजन में नृत्य व अपराह्न ढाई से देर रात समूह गान हुआ। एकल नृत्य में 18 और समूह गान प्रतियोगिता में प्रत्येक ग्रुप में 8-8 संभागियों ने हिस्सा लिया।

सभी को किया दरकिनार, मैंने मंत्री को भी बताया

सांसद अर्जुन मीणा ने आरोप लगाया कि जनजाति विभाग के कार्यक्रम में स्थानीय जनप्रतिनिधियों को दरकिनार किया गया है। विभाग से अतिरिक्त आयुक्त ने फोन पर आमंत्रण दिया था, उन्हें बताया कि किसी भी जनप्रतिनिधि का निमंत्रण पत्रक पर नाम तक नहीं है। किसी को पूर्व निमंत्रण नहीं है तो हम क्यों कार्यक्रम में आए? मीणा ने नाराजगी जताते हुए कहा कि इस विभाग को बड़ी राशि केन्द्र सरकार से भी मिलती है। केन्द्र के राज्य मंत्री सरुता जो इस आयोजन के लिए आमंत्रित हैं, उन्हें भी मैंने ये जानकारी दी है। ये बेहद दुखद है। ऐसे आयोजन में राजनीति नहीं होनी चाहिए। जनजाति क्षेत्र के सभी जनप्रतिनिधियों को इस आयोजन का हिस्सा बनाया जाना चाहिए। उल्लेखनीय है कि शुभारंभ में भारत सरकार के जनजाति कार्य मंत्रालय के केबिनेट मंत्री अर्जुन मुंडा व राजस्थान के जनजाति मंत्री अर्जुन बामनिया को शामिल होना था, लेकिन वे भी नहीं आए।